# 24 तीर्थंकर विधान (लघु)

## माण्डला

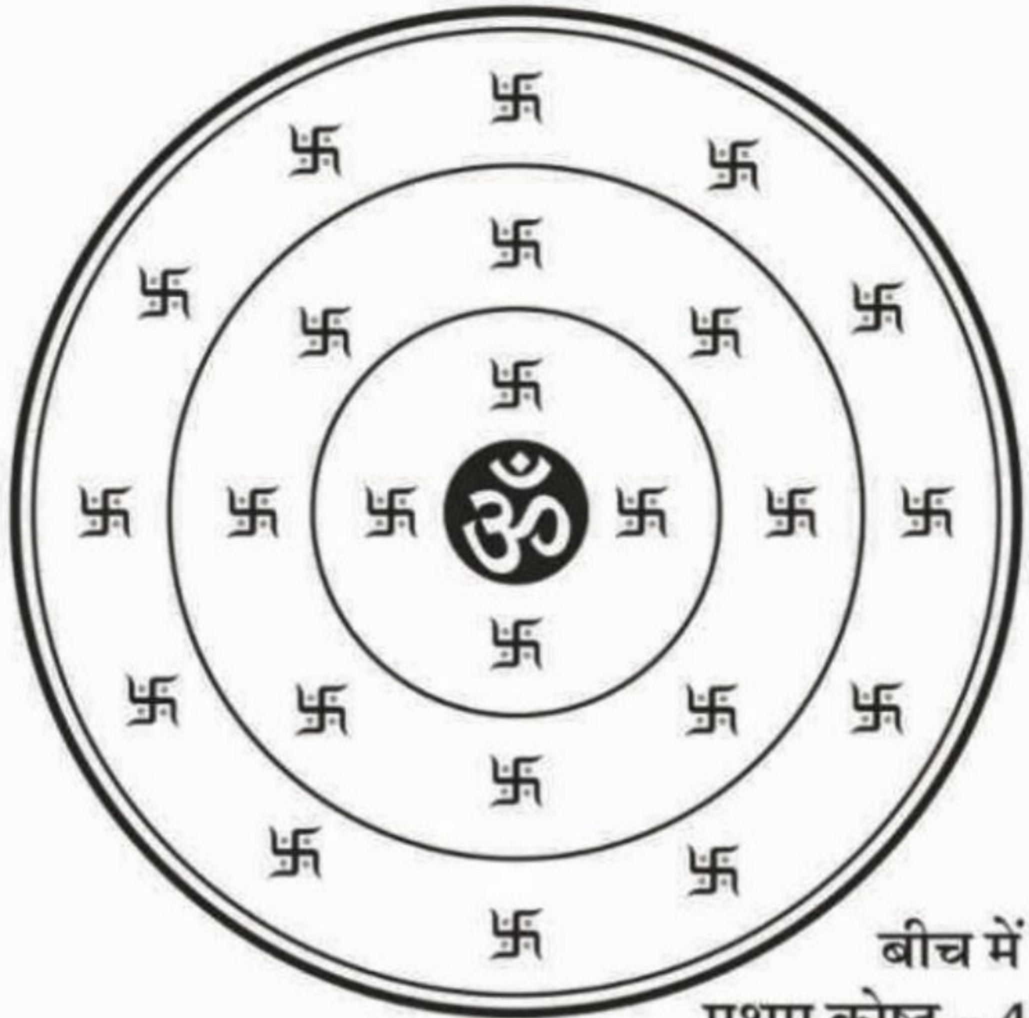

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

# चौबीस तीर्थंकर स्तवन

तर्ज – नित देव दर्शन.....

वृषभेष दर्शन आपका, करने यहाँ पर आए हैं।
अजितेश के दर्शन से उर में, हर्ष मेरे छाए हैं।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।1।।
सम्भव जिनाभिनन्दन पद, पूजते हैं भाव से।
श्री सुमति पद्म सुपार्श्व जिनवर, पूजते हैं चाव से।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।2।।
श्री चन्द्रप्रभु जिनपुष्प शीतल, श्रेय जिन गुण गा रहे।
जिन वासुपूज्य विमल अनन्त, धर्म जिन को ध्या रहे।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।3।।
श्री शांति कुंथु अरह जिनेश्वर, मल्लि मुनिसुव्रत सभी।
नमि नेमि पारस वीर जिनवर, पूजते मिलकर अभी।।
तव दर्श करके भाग्य जागे, विशद भक्ती उर जगी।
चौबीस जिन की अर्चना कर, लगन चरणों में लगी।।4।।

(पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

# चौबीसी विधान

स्थापना

**तीर्थंकर चौबीस हैं, जग में पूज्य महान।**
**जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम आह्वान।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई)

**यमुना का शुभ नीर चढ़ाएँ, रोग जरादिक पूर्ण नशाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन केसर सहित चढ़ाएँ, भवाताप से मुक्ती पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**साबुत अक्षत धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग अपना विनशाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**सरस शुद्ध नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के पावन दीप जलाएँ, आरति करके मोह नशाएँ।
चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नी में यह धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल ताजे हम यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी हम पाएँ।
चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव पाएँ।
चौबिस जिन पद पूज रचाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा दे रहे, यमुना का ले नीर।
भाते हैं यह भावना, पाएँ भव का तीर।।
शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पांजलि कर पूजते, हैं चौबिस भगवान।
अर्चा कर हमको मिले, शिव पद का सोपान।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

## अर्घ्यावली

दोहा-तीर्थंकर पद पाएँ है, चौबीसों जिनराज।
पुष्पांजलि कर पूजते, भाव सहित हम आज।।
(अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# चौबीसी के अर्घ्य

चाल छन्द

हैं पावन वृष के धारी, श्री ऋषभ देव अनगारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अजित स्वयं के जेता, कर्मों के विशद विजेता।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभव जिन अनगारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदन जिन स्वामी, हैं त्रिभुवन पति अभिरामी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमति सुमति के दाता, हैं जग के भाग्य विधाता।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पद्म पद्म सम गाए, प्रभु पद्म चिन्ह शुभ पाए।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

**जिनवर सुपार्श्व कहलाए, जो मोक्ष मार्ग दर्शाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री चन्द्रप्रभ कहलाए, जो धवल कांति फैलाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन पुष्पदन्त अभिरामी, जो हैं त्रिभुवन के स्वामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शीतल जिन शीतल कारी, हैं अतिशय महिमा धारी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।10।।**

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो श्रेय प्रदाता गाए, जिनवर श्रेयांस कहाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।11।।**

ॐ ह्रीं श्री श्रेंयासनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन वासुपूज्य जग नामी, इस जग में अन्तर्यामी।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।12।।**

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन विमल गुणों को पाए, श्री विमलनाथ कहलाए।**
**हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।13।।**

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अनन्त गुण धारी, जिनकी महिमा है भारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।14।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं धर्म ध्वज के धारी, श्री धर्मनाथ अविकारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।15।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो हैं अति शांति प्रदायी, श्री शांतिनाथ शिवदायी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।16।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं कुन्थ्वादि जो प्राणी, उनके भी हैं कल्याणी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ,पद सादर शीश झुकाएँ।।17।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री अर जिनराज निराले, जग के दुख हरने वाले।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।18।।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं मल्लिनाथ जगनामी, सब मल्लों के हैं स्वामी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।19।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री मुनिसुव्रत व्रत धारी, शिवपथ गामी अनगारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।20।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ की महिमा गाएँ, शिव पथ की राह बनाएँ।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।21।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री नेमिनाथ अविकारी, हैं पावन संयम धारी।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।22।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री पार्श्वनाथ कहलाए, उपसर्गों पे जय पाए।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।23।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
श्री महावीर जिन गाए, जो विजय स्वयं पर पाए।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।24।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चौबिस तीर्थंकर जानो, जो जगत पूज्य हैं मानो।
हम जिन महिमा शुभ गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।25।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

## जयमाला

दोहा- तीर्थंकर चौबीस हैं, महिमामयी त्रिकाल।
पूज रहे जिन पद यहाँ, गाते हैं जयमाल।।
(ज्ञानोदय छन्द)
तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।

पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुलवय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं।। 1।।
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन।। 2।।
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।। 3।।
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न बर्साते हैं।
जन्म कल्याणक के अवसर पर, मेरु पे न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहसनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जयकार लगाते हैं।। 4।।
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
विशद भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप।। 5।।

दोहा- जिनकी पूजा कर मिले, जग में शांति अपार।
अतः पूजते जिन चरण, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिर्थंकरेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा करते हम यहाँ, 'विशद' भाव के साथ।
मुक्ती पद हम को मिले, झुका रहे पद माथ।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्

# चतुर्विंशति स्तवन

(अनुष्टुप छन्द)

ऋषभाय नमस्तुभ्य, अजिताजित् कर्मणाः।
नमो संभव नाथाय, नमोऽभिनन्दनस्-तथा।।1।।
नमो सुमति देवाय, पद्म प्रभ जिनेशिनः।
श्री सुपार्श्व जिननाथ, श्री चन्द्राय नमो नमः।।2।।
पुष्पदन्त जिनेन्द्राय, शीतल शीतीभूत नः।
श्रेयस्करो जिनो श्रेयः, वासुपूज्य जिनेशिनः।।3।।
कर्म मुक्तो विमलाय, गुणानन्त गुणार्णवः।
धर्मनाथ नमस्तुभ्य, शांति जिन शांती करः।।4।।
कृत्वा कुन्थु जिनो रक्षां, मोहान्धः अघनाशकः।
कर्म मल्लजितो मल्लिं, सुव्रतो मुनि सुव्रताः।।5।।
मुक्ति रक्तः नमिनाथः नेमिनाथ सिद्धि प्रियः।
उपसर्ग जयः पार्श्वः, वीरः युगे च शासकः।।6।।
चतुर्विंशति तीर्थेशान्, प्राप्त पद तीर्थकरः।
'विशद' ज्ञान लाभाय, भक्त्या तुभ्यं नमो नमः।।7।।

आराधयामि तव पुण्य गुणान् स्मरामि।
स्वमेव नाथ विशदं हृदि धारयामि।।
एवं तदीय चरणाब्ज मुपासमानात्।
मुंचंति मां न कथमद्य स्वकर्म बन्धाः।।8।।

# 24 तीर्थंकर विधान (संस्कृत)

स्थापना (अनुष्टुप छन्द)

**कल्याणातिशयोपतं, प्रातिहार्य समन्वितं।**
**सुरेन्द्रवृन्द वन्द्यांघ्रं, जिनं नौमि जगद्‌गुरुम्।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(उपजाति छन्द)

**श्रीमज्जिनेन्द्रामल कीर्ति गौरै, मंदाकिनी निर्झर वारिपूरैः।**
**अंभोज किंजल्क रजः पिशंगैर्,-यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।1।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**तुषार शीतांशु मरीचि शुभ्र, श्रीचंदनैः कुंकुम युक्तमिश्रैः।**
**संतोष पीयूष शरीरभाजो, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।2।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षुण्य सौख्यामल बीजरूपैः, शाल्यक्षतै रिंदु-कलावलक्षैः।**
**अनन्यसाधारण कीर्ति कांतान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।3।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

**जाती जपा पाटलिभिर्विराजी, मंदार माला बकुलादि पुष्पैः।**
**श्रेयःश्रियो मंगल हारभूतान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।4।।**

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राज्याज्यसिद्धामृत पिंडभक्ष्यैः, शाकै-रनेकैः सुरभि प्रपूतैः।
अनंतसौख्यामृतपिन तृप्तान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।5।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टिप्रियैरुज्वलरत्नदीपैः, सुररत्नसिद्धैर्मणिभाजनस्थैः।
स्वकीय-दिव्यांग-मरीचिमग्नान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालाहि देहाकृति खांतराले, व्यापत्-सुधूपैः सुरभी कृताशैः।
इष्टार्थसिद्धये शिवताति भक्त्या, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जंबीर जंबूवर बीज पूर-, द्राक्षाम्र पूगीफल नारिकेलैः।
सुरेंद्र चूडांशुविलग्न पादान्, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि सद्द्रव्य कृतै-रनर्घ्यैर्-, बलाहकैर्-मंगलमंगलार्घ्यैः।
रजो रहस्यं रहसः सुधान्यैः, यजे चतुर्विंशति तीर्थनाथान्।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शालिनी छन्द)

जंबूदीपे भरतक्षेत्रमुख्य-श्रीतीर्थेशामंघ्रिपीठोपकंठे।
देवेंद्राचर्यंश्रीपदां संतनोभि, संसारार्तेः शांतये शांतिधारा।।

(इति शांतिधारा...)

# अर्घ्यावली

दोहा – चतुर्विंशति तीर्थेश, स्तुति कृत्त्वा सु भक्तितः।
विशद ज्ञान योगेन, भक्तिं अर्हत् गुणार्णवम्।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

# 24 तीर्थंकर अर्घ्यावली

(अनुष्टुप छन्द)

**श्रीमंतं मुक्तिं भर्त्तारं, वृषभं वृष नायकम्।**
**धर्म तीर्थंकर ज्येष्ठं, वन्दे नन्त गुणार्णवम्।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**योऽजितो मोह कामाक्षाराति जालैः परिषहैः।**
**एकाकी मिलतै सर्वैः रजितं तं स्तुवे मुदा।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सम्भवं भव हंतारं, त्रिजगद् भव्य देहिनाम्।**
**कर्त्तारं विश्व सौख्याना-मीडेतद गतयेतिशम्।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**विश्वविज्ञं विदिर्वेदं, वीरं विराग वैभवम्।**
**संग मुक्तं यजे नित्यं, नौमि जिनाभिनन्दनम्।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमामि सुमतिं देवं देवं सुमति दायकम्।
भव्यानां सुमति मूर्ध्ना, स्वच्छ सन्मति सिद्धये।।5।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पद्मप्रभ-महं नौमि, द्विधा पद्माद्यलंकरम्।
तद् पद्माप्त्यै सुजन्तूनां, पद्मादं पद्म कांतिकम्।।6।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
नमः सुपार्श्व नाथाय, सुधियां पार्श्व दायिने।
अनन्त शर्मणेऽनन्त, गुणायातीत कर्मणे।।7।।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भव ज्वलन संभ्रान्त सत्व शांति सुधार्णवः।
नमश्चन्द्रप्रभः पुष्याद्, ज्ञान रत्नाकर श्रियम्।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सुविधि विधि हन्तारं, भव्यानां विधि देशनम्।
स्वर्ग मुक्ति सुखाधारत्यै-मुदेविधिहानये।।9।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
शीतलं भव्य जीवानां, पापाताप विनाशिनम्।
दिव्यध्वनि सुधापूरै, नौम्यद्यातापविच्छिदे।।10।।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
श्रेयः श्रेयेषु नास्त्यन्यः, श्रेयसः श्रेयसे बुधैः।
इति श्रेयोऽर्थिभि श्रेयः, श्रेयांस श्रेयसेस्तु नः।।11।।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वासो रिन्द्रियस्य पूज्योयं, वसु पूज्यस्य वा सुतः।
वासुपूज्यः सतां पूज्यः स ज्ञानेन पुनातु नः।।12।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कल्याणातिशयोपेतं, प्रातिहार्य समन्वितं।
सुरेन्द्रवृन्द वन्द्याङ्घ्रिं, विमलनाथ नमाम्यहं।।13।।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अनन्तोनन्त दोषाणां, हन्ताऽहन्त गुणाकरः।
हन्तत्व ध्वन्ति संतान-मन्तातीतं जिनः सानः।।14।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सत् संयम पयः पूर, पवित्रित जगत्-त्रतय्।
धर्मनाथ नमस्यामि, विश्व विघ्नौघ शान्तये।।15।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
नमः श्री शांतिनाथाय, जगच्छांति विधापिते।
कृत्स्न कर्मोघ शान्ताय, शान्तये सर्व कर्मणाम्।।16।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
यद् दिव्यं ध्वनिना-त्रासीद्, रक्षाकुन्थ्वादि देहिनाम्।
कुन्थ्वादौ सदयं कुन्थुं, वन्दे कुन्थु कृपायतम्।।17।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
यद्वचः शस्त्रघातेन्, दुर्धराः कर्म शत्रवः।
नश्यन्ति स्वेन्द्रियैः सार्ध, सोऽरोमेस्त्वरिहानये।।18।।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोह मल्ल ममल्लं यो, त्यजेष्टानिष्ट कारिणम्।
करीन्द्र वा हरिः सोऽयं, मल्लिः शल्य हरोस्तु नः।।19।।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ज्ञानलक्ष्मी धनाश्लेश, प्रभवानन्द नंदितम्।
निष्ठितार्थ-मजं नौमि, मुनिसुव्रत-मव्ययम्।।20।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
नमीशं नमितारातिं, त्रिजगन्नाथ वंदितम्।
हत कर्मारि सन्तानं, तद्गुणाय स्तवीम्यहम्।।21।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
नमः श्री नेमिनाथाय, विश्व विघ्नोपशान्तये।
त्रिजगत् स्वामिने मूर्घ्ना, ह्यन्त महिमात्मने।।22।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जित्त्वा महोपसर्गान्यो, ज्योतिर्देव कृतान् भुवि।
स्ववीर्य केवल-व्यक्तं, चक्रे चेडेत-मद्भुतम्।।23।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
वीरं कर्म जये वीरं, सन्मतिं धर्म देशने।
उपशार्गाग्निं सम्पाते, महावीर नमामि च।।24।।
ॐ ह्रीं श्री महावीराय जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
चतुर्विंशति तीर्थेशः, पूर्णार्घ्यं प्रापितास्तरां।
शांति श्रियं च कल्याणं, कुर्वन्तु जिन भाषिनां।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# जयमाला

चतुर्विंशति तीर्थेशां, त्रियोगेन समर्चनात्।
पाठात्स्वस्त्ययनस्याऽपि, मनः पूर्वं प्रसादये।।

(अनु)

आदिनाथोऽस्तु नः स्वस्ति, स्वस्ति स्या-दजितेश्वरः।
शंभवो भवतु स्वस्ति, भूयात् स्वस्त्-यभिनंदनः।।1।।
अस्तु वः सुमति स्वस्ति, पद्मभः स्वस्ति जायतां।
सुपार्श्वः स्वस्ति भक्त्वां, स्वस्ति स्याच्चंद्रलांछनः।।2।।
सतां स्वस्त्यस्तु सुविधिर्-भवतु स्वस्ति शीतलः।
श्रेयान् संपद्यतां स्वस्ति, स्वस्त्यस्तु वसुपुज्यजः।।3।।
राज्ञोऽस्तु विमलः स्वस्ति, स्वस्ति भूयादनंतजित्।
भूयाद्धर्मजिनः स्वस्ति, शांतेशः स्वस्ति जायतां।।4।।
संघस्य कुंथुः स्वस्त्यस्तु, भवतु स्वस्त्यरप्रभुः।
स्वस्ति मल्लिजिनेन्द्रोऽस्तु, स्वस्त्यस्त्यु मुनिसुव्रतः।।5।।
जगत्यस्तु नमिः स्वस्ति, स्वस्ति स्यान्नेमिनायकः।
स्वस्ति पार्श्वजिनो भूयात्, स्वस्ति सन्मति-रस्तु मे।।6।।
अस्मिन्नमं स्वस्त्ययनमेक-भक्तिभराद्दधे।
स्वस्तिमंतः स्वसं शश्वत्, संतु स्वस्त्ययनं जिनाः।।7।।

चतुर्विंशति तीर्थेशां, स्मरामि च पुनः पुनः।
प्राप्नुयात सर्वतोभद्र, 'विशद' लाभं पदे-पदे।।

ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्दसम्पन्नान्, विशद गुण शालिनां।
ऋषभादि श्री वीरान्तान्, स्तुति कृत्वा स भक्तितः।।

इत्याशीर्वादः

# चौबीस जिन की आरती

(तर्ज :- मांई री मांई.....)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।
विशद आरती..... ।। टेक ।।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती.... ।।1।।

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती.... ।।2।।
श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती.... ।।3।।
शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्र काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती.... ।।4।।
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती.... ।।5।।

# आचार्य श्री का अर्घ

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरु पद नमन।।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रूँ प.पू. सर्व आचार्य परमेष्ठी यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# सर्व साधु परमेष्ठी का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते हैं, जो उपसर्ग परीषह सहते हैं।
समता जो धारे हैं, मुनिवर हमारे हैं, करते हम गुरु पद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
मुनिवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रः श्री साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

**दोहा - अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।**
**चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।**

ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो नम: / ॐ ह्रीं श्रीं मन्तं भगवन्तं कृपाल संतं श्रीवृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेव आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्य खंडे..... देशे.....प्रान्ते.....नाम्नि नगरे.....मासानामुक्तमे.....मासे.....शुभ पक्षे..... तिथौ.....वासरे.....मुनि आर्यिका श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं अनर्घ्य पद प्राप्तये समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोलें)

# शांतिपाठ

**शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।**
**परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।**
**शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।**
**शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।**
**जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।**
**जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।**
**शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।**

राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।
(शान्तये शान्तिधारा-3) (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत) (कायोत्सर्ग करोम्यहं)

# विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हंदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमावतं भवतु।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।
(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

# 'आशिका लेने का मंत्र'

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

जो मुस्करा कर जिया करते हैं, हँसकर गम पिया करते हैं।
वे इंसान के रूप में देवता हैं 'विशद' जो औरों को सहारा दिया करते हैं।।

# सरस्वती वन्दना

तर्ज- जहाँ डाल-डाल पे सोने की चिड़िया करती

माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अंधेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥
हे माँ! हे माँ! हे माँ!॥टेक॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, जैन धर्म के धारी-2।
कृपा प्राप्त करते हैं माँ की, जग के सब नर-नारी-2॥
माँ की कृपा बरसती सब पे, ना कोई तेरा मेरा॥1॥
कृपा पात्र जो होते माँ के, वे ज्ञानी हो जाते-2।
सारे जग की महिमा पाते, वे होशियार कहाते-2॥
माँ की कृपा से कट जाता है, विशद कर्म का घेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥2॥
निज परिवार समाज देश के, नाम को रोशन करते-2।
शरणागत को सद् शिक्षा दे, उनके संकट हरते-2॥
सरस्वती के वन्दन से हो, मेरा सांझ सबेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥3॥
हम सब बालक मात आपके, द्वारे पर नित आते-2।
विद्या का दो दान हे माता!, सादर शीश झुकाते-2॥
'विशद'भावना भाते माँ तव, हृदय में रहे बसेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥4॥
माँ सरस्वती के सुमरन से, कटता अज्ञान अंधेरा।
है वन्दन माँ को मेरा, है वन्दन माँ को मेरा॥
हे माँ! हे माँ! हे माँ!॥टेक॥

# आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.... ।। टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 1।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 2।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 3।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 4।।